विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
मोक्ष-अनुयोगद्वार	**३३७-३३९**
मल्लिजिन की स्तुति	३३७
मोक्ष अनुयोगद्वार कहनेकी प्रतिज्ञा	३३७
मोक्षका चार प्रकारका निक्षेप और उनकी व्याख्या	३३७
कर्मद्रव्यमोक्षके चार भेद	३३७
प्रकृतिद्रव्यमोक्षके दो भेद तथा प्रत्येकके दो दो उत्तर भेद	३३७
प्रकृतिमोक्षका अर्थपद	३३७
स्थितिमोक्षके दो भेद और अर्थपद	३३७
अनुभागमोक्षका अर्थपद	३३८
प्रदेशमोक्षका अर्थपद	३३८
नोकर्मद्रव्यमोक्षके तीन भेद और उनकी व्याख्या	३३८
संक्रम-अनुयोगद्वार	**३३९-४८३**
मुनिसुव्रत नाथकी स्तुति	३३९
संक्रम अनुयोगद्वार कहनेकी प्रतिज्ञा	३३९
संक्रमका छह प्रकारका निक्षेप और उनकी व्याख्या	३३९
कर्मसंक्रमका प्रकरण है यह सूचित कर उसके चार भेदोंका निर्देश	३४०
प्रकृतिसंक्रमका अर्थपद	३४०
मूलप्रकृतिसंक्रमका निषेध	३४०
उत्तरप्रकृतिसंक्रमका स्वामित्व	३४०
एक जीवकी अपेक्षा काल	३४२
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	३४२
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय	३४४
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल	३४४
अल्पबहुत्व	३४४
प्रकृतिस्थानसंक्रमका विचार	३४६
स्थितिसंक्रमके दो भेद	३४७
उस विषयमें अर्थपद	३४७
अपकर्षणका स्वरूपनिर्देश	३४७
उत्कर्षणका स्वरूपनिर्देश	३४८
उत्तरप्रकृतिके आश्रयसे प्रमाणानुगम	३४९
स्वामित्वविचार	३५२
एक जीवकी अपेक्षा काल	३५४
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	३५९
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय	३६१
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल	३६२
नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर	३६३
अल्पबहुत्व	३६४
भुजगारसंक्रमविचार	३६९
एक जीवकी अपेक्षा काल	३७०
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	३७१
अल्पबहुत्व	३७२
पदनिक्षेप संक्रमकी सूचना	३७३
वृद्धिसंक्रम	३७३
अनुभागसंक्रमविचार	३७४
आदिस्पर्धकनिर्देश	३७४
अर्थपद	३७५
प्रकृतोपयोगी अल्पबहुत्व	३७६
प्रमाणानुगम	३७७
स्वामित्व	३७७
एक जीवकी अपेक्षा काल	३८२
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	३८७
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय	३८८
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल	३८९
नाना जीवोंको अपेक्षा अन्तर	३९१
सन्निकर्ष	३९२
अल्पबहुत्व	३९२
भुजगारसंक्रमका अर्थपद	३९८
एक जीवकी अपेक्षा काल	३९९

विषय	पृष्ठ
अल्पबहुत्व	४००
पदनिक्षेपमें स्वामित्व	४०१
अल्पबहुत्व	४०५
वृद्धिसंक्रममें स्वामित्व	४०६
एक जीवकी अपेक्षा काल	४०६
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	४०६
अल्पबहुत्व	४०७
प्रदेशसत्कर्ममें अर्थपद	४०८
उत्तरप्रकृतिसंक्रमके पाँच भेद	४०८
कितनी प्रकृतियोंके कितने संक्रम होते हैं इसका विचार	४०९
उद्वेलनप्रकृतियोंके उद्वेलनक्रमका निर्देश	४१९
पाँच संक्रमभागहारोंका अल्पबहुत्व	४२१
उत्तर प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका स्वामित्व	४२१
जघन्य प्रदेशसंक्रमस्वामित्व	४३२
उत्तरप्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका काल	४४१
जघन्य प्रदेशसंक्रम तथा अन्य अनुयोग-द्वारोंके जाननेकी सूचना	४४२
उत्तर प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका अल्पबहुत्व	४४२
उत्तर प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेशसंक्रमका अल्पबहुत्व	४४८
भुजगारसंक्रममें स्वामित्व	४५३
एक जीवकी अपेक्षा काल	४५४
अल्पबहुत्व	४५९
पदनिक्षेपमें स्वामित्व	४६१
अल्पबहुत्व	४७९
वृद्धिसंक्रम	४८१
लेश्या-अनुयोगद्वार	**४८४-४८९**
अरजिनकी स्तुति	४८४
लेश्याका चार प्रकारका निक्षेप विचार	४८४
तद्व्यतिरिक्त द्रव्यलेश्याके छह भेदोंका विचार	४८४
प्रकृतमें नैगमनयकी अपेक्षा नोआगम द्रव्यलेश्या और नोआगम भावलेश्या का प्रकरण है इसकी सूचना	४८५
छह द्रव्यलेश्याओंका वर्णन	४८५
किस लेश्यामें किस क्रमसे कितने प्रमाणमें कौन कौन रंग होते हैं इसका विचार	४८७
भावलेश्याओंका विचार	४८८
लेश्याकर्म-अनुयोगद्वार	**४९०-४९२**
कुंथुजिनकी स्तुति	४९०
किस लेश्याका क्या कर्म है इसका विचार	४९०
लेश्यापरिणाम-अनुयोगद्वार	**४९३-४९७**
अभिनन्दनजिनकी स्तुति	४९३
लेश्यापरिणाम अनुयोगद्वारके कथनकी सार्थकता	४९३
छह लेश्याओंके परिणमनकी विधि	४९३
जघन्य और उत्कृष्ट संक्रम और प्रतिग्रहोंका तीव्र-मन्दताकी अपेक्षा अल्पबहुत्व	४९५
सातासात-अनुयोगद्वार	**४९८-५०६**
अजितजिनकी स्तुति	४९८
सातासातके पाँच अनुयोगद्वार	४९८
समुत्कीर्तना	४९८
अर्थपद	४९८
पदमीमांसा	४९८
स्वामित्व	४९९
प्रमाणानुगम	५०१
अल्पबहुत्व	५०२
दीर्घ-ह्रस्व-अनुयोगद्वार	**५०७-५११**
सम्भवजिनकी स्तुति	५०७
दीर्घके चार भेद	५०७
प्रकृतिदीर्घका विचार	५०७

विषय	पृष्ठ
स्थितिदीर्घका विचार	५०८
अनुभागदीर्घ और प्रदेशदीर्घका विचार	५०९
ह्रस्वके चार भेद	५०९
प्रकृतिह्रस्वका विचार	५०९
स्थितिह्रस्वका विचार	५१०
अनुभागह्रस्वका विचार	५११
प्रदेशह्रस्वका विचार	५११
भवधारणीय-अनुयोगद्वार	**५१२-५१३**
सुमतिजिनकी स्तुति	५१२
भवके तीन भेदोंका स्वरूपनिर्देश	५१२
अमूर्त जीवका मूर्त पुद्गलके साथ कैसे सम्बन्ध होता है इसका विचार	५१३
भवग्रहणभवका विशेष विचार	५१३
पुद्गलात्त-अनुयोगद्वार	**५१४-५१५**
पद्मप्रभजिनकी स्तुति	५१४
पुद्गलात्तका चार प्रकारका निक्षेप और उनका विशेष विचार	५१४
पुद्गलात्तका स्पष्टीकरण और उसका पाँच प्रकारसे विचार	५१४
पुद्गलात्तका दूसरा अर्थ पुद्गलात्मा करके विचार	५१४
निधत्त-अनिधत्त अनुयोगद्वार	**५१६**
सुपार्श्वजिनकी स्तुति	५१६
निधत्तके चार भेद	५१६
अर्थपद	५१६
निधत्त और अनिधत्तका विशेष विचार	५१६
निकाचित-अनिकाचित अनुयोगद्वार	**५१७**
चन्द्रजिनकी स्तुति	५१७
निकाचितके चार भेद	५१७
अर्थपद	५१७
निकाचित-अनिकाचितका विशेष विचार	५१७
अल्पबहुत्व	५१७
कर्मस्थिति-अनुयोगद्वार	**५१८**
पुष्पदन्तजिनकी स्तुति	५१८
दो उपदेशोंका निर्देश	५१८
पश्चिमस्कन्ध-अनुयोगद्वार	**५१९-५२०**
भवके तीन भेद करके भवग्रहणभव प्रकृत है इसका निर्देश	५१९
पश्चिमस्कन्धमें बन्धमार्गणा आदि पाँच मार्गणाओंका विचार किया जाता है इस बातका निर्देश	५१९
सिद्ध होनेवाले जीवकी अन्य प्ररूपणा	५१९
आवर्जितकरणके बाद केवलिसमुद्घातमें होनेवाले कार्यविशेषका निर्देश	५१९
योगनिरोध आदि कार्य विशेषोंका निर्देश	५२०
अपूर्वस्पर्धक करनेकी प्रक्रिया	५२०
कृष्टिकरणकी प्रक्रिया और क्षपणका प्रकार	५२१
अल्पबहुत्व-अनुयोगद्वार	**५२२-५९३**
नागहस्तिभट्टारकके अनुसार सत्कर्मका विचार	५२२
सत्कर्मके चार भेद	५२२
प्रकृतिसत्कर्मके भेद करके उनमें स्वामित्वका विचार	५२२
शेष अनुयोगद्वारोंकी सूचना करके अल्पबहुत्वका विचार	५२४
प्रकृतिसत्कर्मके भेद करके उत्तरप्रकृति-सत्कर्मके अद्धाच्छेदका विचार	५२८
स्वामित्वविचार	५३१
अल्पबहुत्वविचार	५३६
अनुभागसत्कर्ममें आदिस्पर्धकका विचार	५३८
घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञाका विचार	५३९
स्वामित्वविचार	५४०
अल्पबहुत्व	५४४
प्रदेशउदीरणामें मूलप्रकृतिदण्डक व अन्य प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व	५५२
उत्तरप्रकृतिसंक्रममें अल्पबहुत्व	५५५
मोहनीय प्रकृतिस्थानसंक्रमका अल्पबहुत्व	५५६
जघन्य स्थितिसंक्रम अल्पबहुत्व	५५६
जघन्य अनुभागसंक्रम अल्पबहुत्व	५५७

विषय	पृष्ठ
जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम अल्पबहुत्व	५५७
लेश्या अनुयोगद्वारमें आठ अनुयोग-द्वारोंका निर्देश	५७१
लेश्यापरिणाम अनुयोगद्वारमें दस विस्तार-पदोंका निर्देश	५७२
लेश्याकर्म अनुयोगद्वारमें पञ्चविधिक पदोंका निर्देश	५७२
सातासात अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७४
दीर्घ-ह्रस्व अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७५
भवधारण अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७५
पुद्गलात्त अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७५
निधत्त-अनिधत्त अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७६
निकाचित-अनिकाचित अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७६
कर्मस्थितिअनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७७
पश्चिमस्कंधमें विशेष विचार	५७७
महावाचक क्षमाश्रमणके मतानुसार सत्कर्मका अल्पबहुत्व	५७९
मोहनीयके प्रकृतिस्थानसत्कर्मका अल्पबहुत्व	५८०
उत्तरप्रकृतिस्थितिसत्कर्मका अल्पबहुत्व	५८१